परिशिष्ट

1. खासक प्रन्याओं की कुली
   वेदांत
   हिंदी
   क्रिया
2. पत्र- पत्रिकाएं
3. कौश
वषाक ग्रन्थों की बुकी

कर्मेद वंशिला

शायण मार्ग, वंदिख आहिलक मण्डल, क्रीता

कर्मेद वंशिला

शाहवेशेकर मार्ग, खा-भाय मण्डल, पाठी

कर्मेद वंशिला

द्यान्द्र मार्ग, वंदिख मन्त्रालय, ज्ञाते

कर्मेद

श्रीराम उमा जापारे, तपकृति, संस्कार, बरैली

कर्मेद वंशिला

शायण मार्ग, वंदिख आहिलक मण्डल, क्रीता

कर्मेद वंशिला

शाहवेशेकर मार्ग, खा-भाय मण्डल, पाठी

कर्मेद वंशिला

द्यान्द्र मार्ग, वंदिख मन्त्रालय, ज्ञाते

कर्मेद वंशिला

शाहवेशेकर मार्ग, खा-भाय मण्डल, पाठी

कर्मेद वंशिला

ज्ञात मार्ग, कंते-सीलन मण्डल, बंधे

कर्मेद वंशिला

द्यान्द्र मार्ग, वार्तालय, बसी।
वैशिष्ट्यपालन

शास्त्रीय वैष्णव

पैरैय वैष्णव

क्रान्ति वैष्णव

वैशिष्ट्यपालन

शाक्तमाख्या

शायण वैष्णव

शायण माख्या, खण्डन दलम धनुश्यालोकी मानति, पुत्र।

शायण माख्या, लाह द्वारा स्पाइरिज, बन्धु रहे, १८६२।

शायण माख्या, नेत्रेक खेन, बन्धु हो।

शायण माख्या, वृक्षारोपण संख्याती भौगोलिक अर्थक, पारागाणि १।

शायण माख्या, खण्डन दलम धनुश्यालोकी, पुत्र।

शायण माख्या, खण्डन दलम धनुश्यालोकी, पुत्र।

शायण माख्या, गोरखपुर

शाफार गोरखपुर

बृन्दावन उपाधिकारि

खैरसंवर उपाधिकारि

शान्तीविपनिकारि

शैस्तिकोपनिकारि

शल्यपतिकारि

१०५ उपाधिकारि।

लाह माख्या, खण्डन दलम धनुश्यालोकी, पुत्र।

शाफार माख्या, गोरखपुर गोरखपुर।

... ...

बाणी विलासी, खेन, संक्षेपण।

शोराम शर्मा, संक्षेपित संस्थान।

वरेली
<table>
<thead>
<tr>
<th>निरुष्टा</th>
<th>हुर्मचार्य की टीका वापस, श्री सैकेतेश्वर प्रेम, वर्षवर्ष</th>
<th>ग्रंथिरुष्ट</th>
<th>वर्षवर्ष संस्कृत प्राकृत शैरिजैरी</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>निरुष्टा</td>
<td></td>
<td></td>
<td>संस्कृत प्राकृत शैरिजैरी</td>
</tr>
<tr>
<td>मुहुदुग्रि</td>
<td>कुतुकुलदुट की टीका वरिष्ठ, पत्रादाया संस्कृत शैरिजैरी, वाराणशी</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>२० सुधिवां</td>
<td>श्रीराम शर्मा, संस्कृत संस्कृत, बरैठी</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>कैलवाण सुधि</td>
<td></td>
<td>मानिन्दा प्रेम, गोवंद देष, गोरखपुर</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>बालिवं गीता</td>
<td></td>
<td>मानिन्दा प्रेम, गोरखपुर</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>बीमुसुसुमुण्डीत</td>
<td></td>
<td>मानिन्दा प्रेम, गोरखपुर</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>महाभारत</td>
<td></td>
<td>मानिन्दा प्रेम, गोरखपुर</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>अभिनव</td>
<td>शाश्वर गार्म, पत्रादाया संस्कृत शैरिजैरी, वाराणशी</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>वाराणशी</td>
<td></td>
<td>मानिन्दा प्रेम, गोरखपुर</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>वायुकरिता</td>
<td>उपखुलिंग (भाटिपालामान)</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>मानिन्दी सन्निहाल</td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>कृष्ण पुराण</td>
<td>दौर शाल, १६९२</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>कृष्ण पुराण</td>
<td>श्रीराम शर्मा, संस्कृत संस्कृत, बरैठी</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>कालिकापुराण</td>
<td>पत्रादाया संस्कृत शैरिजैरी, बादिक</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>वैष्णो पुराण</td>
<td>श्रीराम शर्मा माशाय, संस्कृत संस्कृत, बरैठी</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>लिंग पुराण</td>
<td>वम्भरे भ्रात, खंड १६५७</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>----------------</td>
<td>------------------------</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>लिंग पुराण</td>
<td>श्रीराम शर्मा वांगवार, वंश्वरि संस्थान, बरेरी</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>कुस्त्य पुराण</td>
<td>...</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>प्रज्ञापुराण</td>
<td>...</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>नाकंदक्य पुराण</td>
<td>...</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>वामन पुराण</td>
<td>...</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>मार्शुर पुराण</td>
<td>...</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>विश्व पुराण</td>
<td>...</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>विष पुराण</td>
<td>...</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>शीमच्छामाल महापुराण</td>
<td>वैद्याप प्रणवित, श्रीमणवल विपा-पीत, कन्हावाद</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>कृष्ण पुराण</td>
<td>श्रीराम शर्मा वांगवार, वंश्वरि संस्थान, बरेरी</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>क्रम्यपुराण</td>
<td>नाग पालिकां, भारतवर, बिल्ली</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>नीक्षार्मिक पुराण</td>
<td>श्रीराम शर्मा वांगवार, वंश्वरि संस्थान, बरेरी</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>विष्णुभाषिय धराण</td>
<td>दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>ब्रह्मण्ड पुराण</td>
<td>पंडितजील बासरामदास बिल्ली, बालारामजी, १७७७</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>
वायु पुराण
वायु पुराण
वायु पुराण
वायु पुराण

काकिराप

काकिराप

वायुवतुलकम्
वायुवतुलकम्
वायुवतुलकम्
वायुवतुलकम्

लोकों हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, १६६६
कपराकर्ष
कणान्वयननिमु
वासिंधुमिन्धु
विनामान्वयनिमु

काञ्चन
वासिंधुकरण
वन्यावतक

प्रतिशिक्ष

प्रियभार

प्रकटस्थान

पिनाकस्तुरीयम्
व्यासित्स्या
मुटाप्रेक्षापिनिः
सिन्धुमलयम्
कंपुत्रसम्व
कुटुम्बिकंतावम्
महारूपिन

कक्षि वुरारि
परिमल गुथ
बायां विक्षनाय
विलण
वाचार्य पम्पट
dावां विज्ञाण
वानववभन्न

परिशीत
मार्वि
मौरि
मौरि
मार्वि

dीविस्तार

dावां विस्तार
dावां विस्तार
dावां विस्तार

कौमारि
कौमारि

प्रकाशकस्त्री
सारस्वतीकृष्णानन्दी
सर्वप्रणाली
प्राचीन परिणाम
उपाश्रमाभावानादिक
रामायणोदयानाटिका
गुरु-प्रवृत्तिशा
शास्त्रमहापालि
श्रेणिकिरुद्धमयदारिपि
वांद्रयंत्ररी
शक्तिमहाकल्प
प्रभुवंशाय तन्त्र
शास्त्रशिल्पमय तन्त्र
शिलाकंपंकय तन्त्र
विलासंसंपन्न तन्त्र
तन्त्रारुक्षि
उभ खथला

वीमोघराषुककन्यारायण
महासिप वाणाबन्दु
श्री श्रीरणचंद वैवेच
पुलिवाल
वाचार्य रामेशर कन
शक्तरावः
भीमरीशान लिंगदीवेल
शक्तरावः मात्र, १६५७
गायबात परिसिन्दल वोरीन, कलात्म, १६५७
वंशुल क्रेव दिपोवीलरी, कलात्म, १६५५
वाच्यक्रम उल्लूस्त्र, नारा बारार, खलौन, १६३३
शक्तीलोक वीरीय, १६२३
नारायण भणोत, मात्र
वीसाकाठ्याणाप्रतिमृंगिनिन, वर्षिन्द्रमुणंगाला, पांडिवेटी, प्रभम एखरण, १६४३
शिरहल्ला

मुहूर्तमौत रायाकर

वन्दनार
वन्दनकेश

विभंग समथ

कामक्षापिकाध

प्रत्यक्षप्रभाब

मातिरीविष्णूलाल वन्नि

मोहनी वृद्ध दीपिका

दलिल परम्पराप

वारिसाला साहि

गिरिराज तन्त्र

मन्नकोटधि

शिवमहिमङ्गातिष्णु

पुष्पकमलाश्रि
शिष्य दृष्टि

कालिकालश्लोकः

वर्णमाला वृत्तान्तः विरसितः

कल्पना, १६४७

कल्पना, १६४८

मभि, कान्तिकेन्द्र १६२०

मौजैयिक फूल

वृत्तान्त वृत्तान्तार्थिकः, वाराणसी

श्रीरंग प्रकाश, १६२४

शास्त्रीय संस्कृत भाषा मधुसूदन कौशल शास्त्री
शिमंदी प्रथम धृति

गैदी में मार्तिय अंकुषिण
वामालुक्त ठारुर, लानमण्डल लिख, वाराणसी, १६६६

जनीप में वारिकिम्स लक्ष्य
डत३ गणेश दत्त सपा, विगल प्रकास, गारितावास, १६५७

शैक्षिक पत्र
प्रकाश, भारती मंडर, बीर श्रेष्ठ, पलाषावास

वेदान्त
वालुक शान अवाल, पाठी, बुद्ध

शैला
वहुली, फिन्स राष्ट्राण्णा परिषद्, पटना

शिन गुराण की वारिकिम्स लक्ष्य
प्रकाश विपाठी, हुमायुन शाहुनी, कसी, वाराणसी।

शिम गुराण में के फैरन कल्प
किंवन्द चंद्र भारोत, तीजण प्रथ्यागार, गार्डन, कालम

पारंदेश गुराण का द लांश- लिक कल्प
पारंदेशकरण क्रम, तिमुतामी शेषेश, लालावाड़, १५६९

फल्स पुराण
रामस्थाप विपाठी शांती, हिंदी
वाराणसी वास, प्रसार

पारंदेश वाराणसी का फिना- परिणम कल्प
उमापिराम पर्वेल, भौमाण प्रकास, कलाम, पित्रो, १६५५
पराराजक भाषा संस्कृत

वर्तमान पुराण परिचय

पुराण परिवर्तन

नारायण सुंदर विषय

प्रज्ञावली की हिंदी टीका

चन्द पदाविनम

हिंदी शास्त्र की वैज्ञानिक पुस्तक

चन्द विश्लेषण गंगा शास्त्र

ब्रह्मणों पर प्राचीन संश्लेषण का क्षेत्र

गार्मन देव पाणिन व भास्करेन दिनी भाष्य
<table>
<thead>
<tr>
<th>हिन्दी गिन्तक काव्य का उद्देश्य वाचन</th>
<th>टाओ रामोपाल लम्बा दिनेजः</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>अम्ब्राव को गंगा</td>
<td>जगदीश बन्दु सहेलियों, गुण राधा, उल्लास । १६६५</td>
</tr>
<tr>
<td>देखू वान जागतिक में राधा का कप-विहार</td>
<td>अशिकाजानादासु गुप्त</td>
</tr>
</tbody>
</table>
पाठिथ वार कला

प्रतिमा विज्ञान

मात्रों निर्माण

कलायात्री

पारं शिल्प वादि परि

श्रेष्ठ कलाओं का अलंकार

पालकों

वाल्मीकि नैतिक

छठा रामालास्वरूप, मात्रों
कला, हुराना रंगमणक्षेत्र, परमाणु (कला) ्१५७६

लंदन के सिंथ, पल्लव महासिद्धि
कलामित्र, मानच, ्१५७२

गुरुलाल, नित्य कला प्रकाशन प्रथा लिंग
नवालसाव, ्१६६३

कर्मयेश बन्दर, मात्रों कला प्रकाशन
g, कुप्चारक, दिनी

विलक्षण उद्ध, कुकादित्व
जीना कटरी

प्राप्तवाण योजन, बालिका प्रकाशन,
dिनी

$५५५ नैक्करा

$५५५ नैक्करा
पत्रिकाएं

शास्त्रीय, १६३, दिनमें, नागर

ख्यात

रिम धर, १६५२ वर्ष ३६ शं ७

पाठित ताप, १५३४, लं ९-२ शं ६२

तापमान, १५५३, वर्ष ३९ शं २

परिसूति, पत्र ९०

विपणन, वर्ष ५, लं ४, १६६०, जुलाई
कौश वा दूसरी प्रत्येक

वैदिक कौश • टाटा प्रभाकरन

पुराण लक्ष्मण

वलाकूठ कौश • चुंबक काण्ड

वाचस्पतिम् • प्रक्षण भाग

शूचिकौश • प्रखम्र भाग

धर्मकौश • लक्ष्मणास्त्री जोशी

वरिष्ठ कौश • सिद्धवश्यामा, १६५५ ततो

हिन्दी विनोभ सागर • व्याकरण संस्करण, प्रकाशन, १६५५

हिन्दी विवेक • लग जन्म फु फु

ह्यंडून छूट • भजनार्क बांसवन्द्र हरिवंश अन्नंतर्योक्त, पुनः

Vedic Consonance, Motilal Banarsidas, 2nd Issue, 1964
Vedic consonance, Viswa Bandhu Sastri, Lahore, 1933

New Catalogue Catalogue • V. Raghavan, VI • I.
ENGLISH BOOKS

Holy Bible - Old and New Testaments, Oxford University Press, 1902.

Holy Bible - Old and New Testaments, London and New York Calling Clear Type Press.

Vaishnava Iconology in Nepal, PratapadityaPal, The Asiatic Society Calcutta, 16

Buddhist and Brahmanical Sculptures in the Deccan Museum, M.K. Sattasali, Hon. Secretary Deccan Museum Committee, Deccan, 1923


Bajpai K.D., Sagar through the Ages, Sagar, 1964

Department of Archaeology India, C. Sivaramanlal, published by the Manager of Publications, Delhi, 1955.


The Development of Hindu Iconography, J.N. Banerji, University of Calcutta, 1936


Khajuraho, Madhya Pradesh, Bhopal.


Indian Collection, Anand K. Coomaraswamy

Griffith R. Tail, Hymn of The Veda, Chaukhamba Sandkrit Series

Mac Donell, A.A., A History of Sanskrit Literature, Motilal Banarasidas

Delhi, 1962.
Muir, J., Original Sanskrit Texts 3 Vols.
Trubner and Co., London, 1859-70

Meadowell, A. A., Vedic Mythology, Oxford University, 1897

A History of Indian Philosophy, S.N. Basse Gupta, Vol. I and II
Cambridge University Press, London.

General Introduction to Tantra Philosophy, S.N. Das Gupta

Mohanjodaro and the Indus Civilization, Ed. Sir John Marshall,
Vol. I


Shakti or Divine Power, Subhendu Kumar Dass

The Art of the Subcontinent from Los Angeles Collections, J. Leroy

Davidson, The Ward Titchie Press.

The Art Heritage of India, E.B. Havell, John Murray (Publishers)

Ltd., London W.1.

The Erotic Sculpture of India, Brain Prints, Criterion Books, New
York, 1959.

Indian Dances, Rina Singh and Reginald Massey, 1967.

Tantra Art, Ajit Mukherjee, Anwar Gallery, New Delhi, 1966.

3000 years of the Art of India, Mario Massaglia, Harry M Abrams, Inc., New York, Tulasi Sha, Mumbai, India.


Indian Art: A Short Introduction, K. Bharatha


The Indian Art, Vasudevasharan Agrawal, Vishwavidyalaya Prakashan, Varanasi, 1965.


Coptic Art, Vasudevasharan Agrawal, the J.P. Historical Society, Lucknow, 1948.

Indian Temples and Sculpture, Jean Mendou, Thomas and Hudson, London, 1959.
बलरामस्वर - ऐतिहासिक
दूरदर्शन-६०
वंशानीपत्र प्राप्त भविष्य, बारह
पिल दूध ३३
क्षेत्रारिस्त्र : काण्डवस्तु
पत्र संख्या - ६७
कनारीस्वर: गुप्त काल
चित्र संख्या- ७० (१)

कनारीस्वर: गुप्त काल
चित्र संख्या- ७०(२)
कृपारीसर, उत्तर की जी, कालावाड़ संग्राहलय
विश इंडिया- ६०
कलारिसर : मुरा क्रष्णा
चित्र वस्त्रा - ३६६ (२२)

(कलारिसर) : निर्माण : ऐलाफन्टा
चित्र वस्त्रा - ४०
कानारीस्वर
गुजरात काशी मंदिर
चित्र चौक्ष्य - २

कानारीस्वर : मंदिर का मण्डप
शिल्पज्ञानी
चित्र विभि १० ५
प्राकृतिक वस्तुओं के केन कसा
वर्ती पानी की लाल रंगीनता के परिणामस्वरूप की आकाश, पृथ्वी, पावन, नदी, बालक बारी घर-घर पर बनी आकाश तथा स्थलों के लिए कागज की जाने लड़ी।

वैदिक कवियों ने प्राकृतिक दृश्यों के तत्वों में दैवत्र अनुसार कहा कि उनके दृष्टि का अपना आदरण उन्हें करना चाहिए जैसे जब तक कि उन्हें हमेशा ही हमारी भावना का साधन बन जाए। उपरान्तमें, वैदिक कवियों ने कहा कि राह बारे वास्तव में उन्हें पाता- पिता की स्थापना करना चाहिए।
शक्ति संपन्न माना जाने लगा। ग्रन्थदेव ने हनुम को प्रसन्न कर उक्तिशाली देव माना गया है। एक मन्त्र में वर्णन है- हनुम अपनी शक्तियाँ के दारा बूहू ते रूप धारण कर लेता है।

देव शक्ति की फूल रूप देने की वह कल्पना पूरा: ग्रन्थदेव के दसम मंडल के प्रक्रिया पूर्वक (१२२५) से उत्पन्न हुई हैं किन्तु दुर्गिन की उत्पत्ति का वर्णन करते हुए कहा गया है कि वह के प्रसाद बोध काम है संहार को उत्पन्न किया गया।

क्रियाशील काफिला शक्ति वाले वह फूल, पालत या संहार में फूट हूँ- किसी प्रकार के ताप हुए वाले रूप में फूट रहते हैं। इसी संहार, दुर्गिन तथा पालत की वालता कार्यक्रम भी, लक्षित रूप की फली, जो संहार का कैद है विनोद कालो, हुआ, पाषाण, उप, हत्यादि नाम दिये गये हैं, उन विशाल संख्यावादी द्वारने के लिए तम्मरूप देव-मंडल में अर्धभिंद्र महर्षिप्राण्ड देवता का बन बैठता। कभी कभी तरारे देव को दो रूपों वाला माना गया है, जिसमें बायबिल और का बाथा भाषा पृथ्वी वल्लुव वुध्र का तथा बायरा भाषा नारी काल का प्रतिनिधि होता है। इन पर-पर छुदका रूप ही प्रलयप्राणा दुर्गिन के लिए वाल्मक होते हैं।

छ भार एक में कौन की काया के में
कौन की मध्य मानना वैदिक कार्यों के मात्र में निरस्त, विकसित होती गयी,
बारे एक कास्था में पूर्ण बर उन्हें धारणानुरूप दे यह कल्पना बनाने लगी कि एक
देवता कामा एक दी कमान ज्याता लेना देवता के में नजर का अंहू तारे विश
की प्राचीन है। अपनी सब मानूषति का प्रकाश करते हुए यह मन्त्र में कार्य करता है कि अद्यतन की पर्व है, अद्यतन की सन्तापित हैं, अद्यतन माता हैं, अद्यतन की पिता जाने का। कार्य के यह मन्त्र हैं जो उत्पन्न हुआ है तथा जो उत्पन्न होगा। क्षत्रिय विषय शक्ति की तादानिका का स्वर्ण विषयार्थ, विषयार्थ, प्रभापति तथा पुरुषार्थ के नाम है किया गया है। विषय की अव मात्र शक्ति के गांध देवखार के तात्कालिक या सुभाष को कृतिक बौक है की कर्मानौरोग्य रहा जाता है। क्योंकि यह सर्व कुल हृदया स्वी के भान प्रयोग है भिनोत्तर हरिन्द्र हैं। यह ब्रह्म की फनी वति फलस्व, क्रियास्थ या वति शक्तिशस्तिक है। जैसे उच्च ब्रह्म भर्तित है यहि प्रकाश उत्पन्न हुआ जो मृत्यु मात्र तथा पिता दिनों दे उत्पन्न होता है। प्रारम्भ में वह क्षत्रिय था। उसने दूसरों की बच्ची की। यह वेदि ही था, जेबा ज्ञान और मुरुण्ड दोनों से दूसरी है वेदिकाविश्वा खोए हैं। उसने उसने यह वात्त से दो मागृ वेदि किया। यह प्रकाश गाय के हुए के भान्य अन्नारोग्य प्रभापति में वर्तने- मुरुण्ड वह दो मुरुण्डवात छोटर खिस्त हो गये। कर्मानौरोग्य का भूत प्रति वही कहता जा कहता है।

वैदेहें में क्षर कर्मानौरोग्य की त्वर-पुरुषार्थ कुरार बारे गुणारी कहा गया है। तथा त्वर का युत्पन्नित्व त्वर वह तथा गुणारी (कष्टम ११६. २७)। प्रकाश कथि के संय भाग में पुरुषार्थ वह वह प्रकाश पुरुषार्थ के संस्य भाग में चोर है। बिजव: गदली ने मुरुण्ड बाहु: (कष्टम ११६. १६)। वैदेहें में क्षर कन्या या मिल बौ कर्मानौरोग्य का रुप कहा गया है।

वही मिल कबी में उपार गारे मुरुण्ड के रुप में वानित है। यहाँ उपार की गारे की फनी माना गया है। कहाँ
विभाग में वैदिक कवि की एक उपद्रव काव्यक रूपांतर कल्पना है विभाग के प्राकृतिक उपन्यास का अनुमान उसी प्रकार कल्पना है विभाग की भूमिका सुकृति साहित्यि रहस्यों के बारे में चर्चा है। अगे चलकर उपन्यास और सुझाव के सिद्ध हुए रूप की गल्प की कल्पना केनारीमेट्रा के रूप में की गयी है।

उसी तरह पुरुषों के लोगों की मानचित्रण है जो कल्पना प्रकाश के गल्प हैं उनके ब्रह्म के बाद अनेक प्राकृतिक रूप के शालन मानव के प्राकृतिक कल्पना को जाता है, जो केनारीमेट्रा की गल्प में सामान्य सिद्ध होता है।

क्षण तरह कवि को लोग के सिद्ध की वास्तविकता है। पुरुषों का रूप के धार्मिक भाषात्मक जीवन को धार्मिक भाषा का बयान है। अबुर्जनी में हास्यदर्शन दिता धार्मिक की माननी वाली गयी है और उत्तर दिशा वांछन है। धार्मिक भाषात्मक भाषा के पुरुषों की उत्पादित कल्पना गयी और धार्मिक उत्तर पाने के लिए कालों को। अबुर्जनी जो की कर्म-मिति मानकर उक्त धार्मिक भाषा के विपरीत उत्तर में - वाले भाषा में पाने हो दक्षिण ऊपर केनारीमेट्रा की कल्पना उन्होंने दोनों भाषाओं के समन्वय के बाधारार पर है।

उपनिषदों में विवेचन: ब्रह्माण्यम, खान्दोशा, और प्रस्तुतांप्रविश्वास में कपर और मिन्न कल्पना है। प्राकृति क्रांति के प्रकाश में हस्ताक्षर ही व्यक्ति पर नवीन नाटक है कि प्राकृति के धार्मिक प्रकाशमाल के पहले अंक मिन्न का ज्ञान किया। इस मिन्न के प्राकृति के दोनों उपकरणों का साधारणत: धार्मिक और रथया प्रायण जारी वन्य क्षेत्र क्षेत्र और लघु क्षेत्र जाता है। खान्दोशा में वाक्य और प्रायण के मिन्न को वाले मिन्न हैं।
प्राण का काल के लिए शाक्तितमनों में छ्वा 
शाक्ति की शिव जारे बने, रथ की शक्ति का प्रशान्त नाता गया है। छवा 
शाक्ति जारे रथ तत्त्व ने ही प्राण का काल के लिए शक्ति के सम्बन्धित हथ 
नारीकल के वाहाक्रमी प्रथम कर रही है।

मेलुमुनिनस् में ब्रह्म के दो रथ को गया 
हैं - मुलां बारे अभिरुची। जो मुलां वह ज्ञात है, जो अभिरुची है वह ज्ञात है, 
वह ब्रह्म है लोहे व्यथा ज्योति है। शाक्तियों ने सम्बन्धित हथ दोनों हथों की 
सम्बन्धित हथ का हो तर्क की दंडा हो, किसी वारे तलकर कर्ण- 
नारीकल के रथ में कर्त्ता को गया है।

रहस्यमातालोपिनिनादु में दो मुल वाहे 
नारीकल की ब्राह्मण का रथ का विकाश मिला है। छवा वाहे की शाक्तितमनिनादु 
में ब्रह्म की जिरादु का रथ मता है। ज्ञ जिरादु पुरुष है वस्तु ने दो 
मानों में विस्तार कर वाहे के पुरुष जारे वाहे की चोटी का जीन्द किया था।

मुत्ते ने भो लिखा है कि ब्रह्म ने दोनों देश 
की दो मानों में विस्तार किया, वाहे से पुरुष जारे वाहे वाहे से चीर। 
शाक्ति वाहन में लिखा है, वह जो जिन्द से वह जारे- जारे हैं। जब खु 
बाहे का दूसरे वाहे मान से मेल हो जाता हैं तब वे परिवर्तन हो पूर्ण हो जाते 
है। विषयीय भी चीर है कि तो वारत खेल, पत्थर भास्ता हैं, वह क्षय 
है। यह वाहन का विषयीय नहीं है कि वह वारत हो नहीं कर बाहे। पत्थर ही 
बाहे का वात्सल्य का वात्सल्य मान है, उसके मिलने पर यह यह वात्सल्य है। किते 
को वात्सल्य में जारे भी स्पष्ट किया है कि यह जारे बाहे का वात्सल्य मान
हें, एकदम उस तक पतनी की प्राप्ति नहीं कर लेता है। युग्मत्व नहीं कर सकता है वह जब वह चाचा की प्राप्ति कर लेता है तब वह नहीं युग्मत्व (स्त्रियाद) लेता कुछ नहीं। फिर यह वह तब पूर्ण हो जाता है। यह ख्याति उद्घाटन तत्त्व हो जाता है कि युग्मत्व वार वही पतनी नहीं है। दोनों एक ही कुछ के दो पत्र हैं। विष प्रकार युरहा वार रक्षित पतनी एक ही है, उसी प्रकार युरहा वार ची है।

ब्रजस्वल रूपाणियार ने इस हृदर (प) का वर्णन अथवा प्रकार किया है कि भगवान श्रीकृष्ण देवी की संकालता है को संक्रिया-पान रत्न है। ते नर जारी नारी। युरहा वार श्रीकृष्ण-दोनों कला वला युग्मसागर होते हैं, परन्तु यह नहीं है।

क्योंकि तिरलाय को कल्पात्मक ब्रजस्वल रूपाणियार में युरहा की श्रीकृष्ण वार नारी को राणा का । प कायम गया हो भगवान श्रीकृष्ण पुराण है यादि मे ब्रं व मे बढ़ाने थे। उत्तर तक उसके बन में पुराण 

रक्षा का अंत्य उत्तर हुआ यार वह कृष्ण काम है प्रेमिका हेतु से नायक में उत्तर हुआ। पर जन्म स्त्रेस ने पुराण वार प्रकृति है कि नारी में नियान्त्रित किया को जो। जब दयाल की नारी । प में तासकी हुआ यार दाँवा नारी पुराण (प) में। यह श्रीकृष्ण ही श्रीकृष्ण को प्राण-वत्स्ता राखा है।

क क्षर विश्व युरहा गार नक्षत्र प्रकृति है। एक पतनी हे जन्मित । यह नारायण की परिक्रमा में देवता है कि मान्य पुराण है एक युग्म रूप हो कालूल किया गया है।

क यह विश्व रूपाणियार में लाते है कि पुराण के प्रान्त वार में निरक्षा ने विषाद रक्षा का अंत्य अने प्रायों को पुराण को
शुक्र द्वारा पस्यां उन्नयन कि उनके पिँटौ दे पुराते पिँटौ में ही सिद्धी विदे इरी हैं। क्रान्तां में तथा क्रियां प्राप्त रूप रूप नहीं है। तब तक नारी द्वारे प्राप्त नहीं हुआ था। सूक्ष्म की प्रेषण के साथ नारी के आकार की सम्पन्न क्रिया गाय गुणित के वरीय की सुविदा गाने लगे। कन्यारोचर का गुणित क्रिया की प्राकृति सम्पन्न बनवायित है। उसने नारी गाय पुरुष के, हुकुम की गाय पुरुष के, पारित की गाय परम्पर के क्रिया रिश्ता गाय, रिश्ता के रूपांतर के कन्याकृत को एक दिन ही प्रक्रिया में समाप्ति किया है।

रिस- रिस का रूप तथा पुरुष का प्रतिमा में कन्यारोचर की प्रतिमा के माध्यम से उत्कृष्ट किया गया है। अद्वैत के द्वारे पुरुष नारीका पच्च में पुरुष क्रिया के जटाःजट, वास्तविक कर्म, हाथ में क्रमशः कर्म, और कयार के रूप समझित रखे थे। वर्तमान से ही पृथ्विक कर्म भोले बना होता था। पृथ्वी के स्वभाव का व्यक्ति निर- निर पर गुण। गुण उपर्ण क्रिया में उपस्थित कारण अतिक्रम दिकुलोपकारों की बात। इसलिए कन्यारोचर का हुकुम का ध्वनि लग जा पुरुष में कहीं से उद्धृत होता है। परम्परा पुरुष में ही का रिस की पारित के साथ उपासना की गई है, तब रिस को यही उपासना दिया गई है। लेकिन पुरुष में तब गर्व दर्ज नहीं होता है की ब्रह्म के उपासना ने पारित रिस के लाभ क्योंकि रिस दे उद्धृत हो गई है। वाता पुरुष में रिश्ता की पुरुषा पार प्रथम रिस का हुकुम दिया गया है।

जयकुमार का पुरुष का प्रवीण क्रिया का उद्देश्य कहीं हुस्तर सिद्ध है कि कन्यारोचर क्रिया का समस्त रूपवार रिस की तत्क्षणता दिखायी दर्शाया है। रिस के उपासना के लिए कन्यारोचर क्रिया है दिन होता गया है।
तिले गुर्गं, विष्णु पुराण, भागवत

गुराण के विविध रंग पुराणों में पी शाखा और मतु के आकारों
का उपलब्ध मिला है। मतु और शाखा की कक्षा कर्नारीख़र के रूप में
की गयी है। हर्षी हैं अपना प्रावट का विस्तार हुआ है।

अन्द्र गुराण के निकता सन्ध में कर्नारीख़र
की कक्षा गादावरी और नंदा के रूप में की गई है। गादावरी की शिष्य
वितता हुई है, लेकिन नंदा ने उसे अपने विश्व पर धारण कर रक्षा है।
नंदा ने पार्वती की धारण कर रक्षा है और कहीं काभ्रण नंदा का गादावरी
के बधिक महत्व है। तात्फ़ाण वह है कि ऊपर के शत्रु ते दो माग हैं पितामह
वाणिज माग शिष्य का है और वाणिज माग पार्वती का है। उन्हें उस माग का
वो कल्याण महत्व है पितामह पार्वती का निवास है।

प्रवाण गुराण में वर्तक बाँर योग की
कक्षा कर्नारीख़र के रूप में की गयी है। वर्तक बाँर योग शिव-शक्ति को
वर्तक विभिन्न है, लेकिन उन्हें वर्तक बाँर योग का प्रस्तर कहा गया है।

वर्तक गुराण में कर्नारीख़र देवता का
वर्णन है जिसके पुराण अले वे रूप उत्तरक प्रारंभ बाँर स्त्रों की है बन्य शक्तियां
प्रस्तर हुई है।

वासु गुराण में शिव बाँर शक्ति का
विविधता रूप निरंजन है। मलया गुराण में विष्णु के रूप शाखा शिव-
शक्ति की वार्ता तथा उनके माहात्म्य का समलया वर्णन है।

विष्णूमार्त्तर गुराण में वर्णित गारी-
फ़ूड़के के रूप हैं। इनके गर्भित पत्ते की चट्टो वह कहाँ की प्रतिष्ठा का कारण रूप है जो कर्णारीश्वर रूप में प्रस्तुति किया गया है।

काश्य कुराण स्त्रियापाद का द भल्ल उपकुराण है। इस कुराण में दृष्ट देखा है कि कर्णारीश्वर रूप की कस्ता कर्णारी प्राविश्न है। जिस ग्रहणीत्र उपजीत हुई उसका गी बाहा माग पुरुस्ततल्य बाहर बाहा माग ली तत्त्व था। इसी कुराण में एक भगवान के माध्यम से कर्णारीश्वर के रूप की इस प्रकार बताया है -

** एक दिन लिख के राहुल पण्डित के समान चित्र हुए ठग यथाश्रेष्ठ पर पायी ने वही प्रतिशिष्ट हुईं शाय सूरा को देखा बाहर गितो हिरी शीर का प्रतिशिष्ट सम्मक लिख के रचन दो गयीं।

तथप्राचू उन्निनी वफ्फी लक्ष का उपनाम हो बाहर की वादिनता प्रस्त की वही के प्रतिज्ञा प्रोटो ने वफ्फी शरीर की बाहर वाहे रूप के मिला लिखा।

यह लिख का कर्णारीश्वर रूप बन गया।**

पुराणों के विशिष्ट वाच्य साहित्य में यह कस्ता बिल्कुल है वाहे फिल्महै। जिनी प्रत्याश्य बाध्य हुए है, उन्निनी वफ्फी उपासना का लक्ष्मण वान तिवार कर्णारीश्वर की विचार धारावान की ही जोकार किया है। काश्य कर्णारीकल्ता शंकर मण्डल के उपाधिक है। यह वा। उन्निनी वफ्फी प्रस्तु के फंग उन्निनों में फ़ूलकार ही।

शंकर मण्डल के कर्णारीस्कल्ता के रूप में उन्निनी वफ्फी वैव होने के कारण फ़ूल उन्निनों के वाबाबाब हैं। रूपों के बारे में लिख बाहर उपास का हर रूपों में स्वमित किया है।
वागपरिवर्त अथवा वागप्रतिफलते।
जगत: पितारा वन्दे पार्वती परमेश्वर।

द्वारा प्रारंभ श्रवण चर्म वलं वलं हौँते हुए भी बिधिम हैं। उसी प्रकार पार्वती चर्म परमेश्वर कृपा- कृपा होते हुए भी बिधिम हैं। कालिकास के लिए पार्वती के लिए बिधिम भाव के वाह्य पर महोदाताम। राधेश्याम।

कृष्ण रुक्मिणी बादों देव दुर्गा की क्षणा हुई है।

इस प्रकार कालिकास को रक्षा में

कृष्णारीम्बर का उत्सै मृत्यु अज क्रय्यपि दोनों सदृशे विश्वास है।

कृष्णावस्थानुि में कृष्णारीम्बर की क्षणा स्वप्न श्रवण है ती कोर, लेकिन इसी के १५ में बाल् उपकुल होती है। इस काल्य में पार्वती लार्के का काल्य वायुतिमिक छिंद्र प्रतिफल करते हुए दोनों को स्वातंत्र वें विचित्र किया गया है। जबकि प्रथम स्तंभ में पार्वती की तपस्याजों खा बच्चन, लार्के तपस्या ते प्रकाश अंतर पार्वती के चालाम में चित्र जाल्लास ना निर्देश किया गया है।

उनमें लिख जाने पार्वती दोनों की शिवमातु रचना के १५ में विचित्र किया गया है। कृष्णारीम्बर की क्षणा के विश्वास में ज्ञान जाल्लास के तत्त्व बाल्का है। बाल्का विद्यामातु स्तंभों में व्याख्यात्मक प्रभाव में स्वातंत्र श्रवण के रूप में उत्सै किया गया। यहां कृष्णारीम्बर की क्षणा स्तंभों का अवलोकन श्रवण स्वातंत्र महोदाताम। श्रावण शरीरार्थरा हरच।

इस दारा शिरे के बाधे शरीर की स्वातंत्र्य पालनों को होना था, हां लिए नास्त्रां को श्रवण जाल्लास प्रभाव के दारा कृष्णारीम्बर के लार्के का कालिक ने विचित्र किया है।
क्रामरी के रचिता वाणमुद्द के पुरा
लिंग मुद्द ने बसने स्थल के रूप हुए राज्य रूप के उल्लास में क्रांतीरीतर रहा। क्रमांकों में ताज्जुब रखिया है -

देशवार्धेनारितावानश्रीरीके प्रयोगुपालित पद्मभूषण।
बन्दे मुख्य भवा परिवारसिवा गुण्येतुरुगितिला परमेश्वराति
ि।

क्षी हर्ष ने बसने क्रमाव "नंदधु" में
"वाणामा वाणामां वस्मस्माका वस्मस्माति।" दो है जिन में क्रांतीरीतर की उपाधि का मूल एवं विलीन किया ही। क्षी हर्ष ने नेन्द्रधाराने "कृतान-यस्मिनिन्द्रस्वमुद्दः।" दो है जिन क्रांतीरीतर का धारा भाषा पाणिनी का वांछ चिंता पांडवों का है। क्षी हर्ष ने नेन्द्र धारा पर नेन्द्रधाराने "कृतान-यस्मिनिन्द्रस्वमुद्दः।" दो है जिन में पांडवों का भी धारा भाषा पांडवों का है। जो क्रांतीरीतर की कल्पना की बोली सूत कहला है।

मृत्ति हर्ष ने वराधणिकमें "प्रौकापदेश-हार्द्वारिन्द्ररी।" दो है जिन पांडवों के भीतित देख का वर्णन कहते हुए कहा है कि प्रमुखों में क्रांतीरीतर लिख है जिन्होंने क्रमा की प्रभार में बसने प्रमुख पांडवों को घायल किया है।

क्रिष्ट गृहार ने "कृतान-धाराने क्रांतीरीतर की कल्पना का निश्चित प्रस्तुत करते हुए कहा है कि क्रांतीरीतर
शिक्षावान का स्कूल की शौक में सुन्दर दिखाई देने वाले हैं तथा उनके दोनों मार्गों में गतिक पर चन्द्रमा विश्वास है, वे पुराने सिंह का कार्यक्षेत्र भार दिखे हुए हैं, उनके उद्भव में चलने वाली ज्योति थे कुछ नकार बार बार बारे में विशिष्ट बहार देने हैं, उत्तर नया बार बार बार बारे में विशिष्ट बहार देने हैं काँपा है।

शिक्षावान का स्कूल वर्णनों के द्वारा

“गरीबीविद्यानार्थकारणिरहिन्दूणि” यह द्वारा काँटारोखर का कृतिका रूप पृष्ठियाँ व्यक्त किया गया है।

पौर ने बताया “पृथ्वीप्रकाश” में सम्पूर्ण बार विप्रतम्भ प्रधान कांटारोखर का लिखन उन शुरू किया है -

बबिन्द्रेश्वरकेशरामचन्द्रप्रसादसरस्वति महाकवीलक्षणिकातिका:

कान्तारविनिवणुः कृताध्वस्त अभाव धरणिः वासु गहुः गुरुरावेः

बबिन्द्रेश्वरकेशरामचन्द्रप्रसादसरस्वति महाकवीलक्षणिकातिका:

कान्तारविनिवणुः कृताध्वस्त अभाव धरणिः वासु गहुः गुरुरावेः

बबिन्द्रेश्वरकेशरामचन्द्रप्रसादसरस्वति महाकवीलक्षणिकातिका:

कान्तारविनिवणुः कृताध्वस्त अभाव धरणिः वासु गहुः गुरुरावेः

बबिन्द्रेश्वरकेशरामचन्द्रप्रसादसरस्वति महाकवीलक्षणिकातिका:

कान्तारविनिवणुः कृताध्वस्त अभाव धरणिः वासु गहुः गुरुरावेः

जन्मों में कांतारोखर कांतिन शिव-शक्ति

के प्रमाणित रूप है वल्ल बल है उल्लेख मिलते हैं। श्रीलिंग दोनों में परस्पर विनाभाव सम्बन्ध पर हो जल्दी बल दिया गया है। अस्तुका: शिक्षा वार शक्ति एक के परस्परत्व की दो स्थितियाँ हैं। वे शिक्षा की एक शक्ति बार बार शक्ति की एक शक्ति मानते हैं। एक शक्ति का यह है कि शक्ति शिक्षा के बिना बार बार शक्ति
के निष्काम वांछन को रचना करते में अक्षर हैं। प्रकार की निष्काम दला में पी उसकी क्षमा विनिर्माण ८ द्वारा उसके व्यक्तित्व रहती है। ऐसी स्थिति में उसे पुण्यत्व या निर्माण माना गया है और जब कह कई क्षमाओं को व्यक्ति कर सकता दला में हो जाता है तब उसे पुण्य मान लिया जाता है। यह प्रकार तत्त्वात्मिक विचारधारा के कुछ ऐसे निर्माण भी हैं और ध्यान मिलता।

वर्तमान निष्काम स्थिति में वे परमात्मा निर्माण होते हैं तारी क्षमा दला में वे ही शक्ति का वित्तन अन्धकार कर देते हैं, अतः इस को निमित्त ध्यान और हृदय को निर्माणशक्ति प्राप्त करे।

होँ प्रकार तत्त्वात्मक में निष्काम वार ध्यान को प्रकार की धार्मिकता को उस्तैत हुआ है। ध्यान उपासना में पर्याय, माई, विश्वास, उपासना स्वयं या बिहार पूजा होती है यहाँ निष्काम उपासना में मूल्य तत्त्वात्मिक वस्तुओं में निर्माण दृष्टि वाल्यात्मिक उपक्रमी क्षमा चाहता है। वात्यात्मिक धार्मिक ध्यान में भी उन्हें पूजा का प्रयोग होता है वो ध्यान धीमी में प्रसिद्ध होते है।

होँ प्रकार भावस्था में रिचत-दानिक के बन्धु-कित्व की उपासना शक्ति में भूत के ८ में विद्वेष, धौर, तन्त्रों में प्रकट हुई हैं। खेल, शाक, विश्वास, धोर, गणित, वाद, जै, वन्य की वहाँ क्षमाओं में हो प्रकार को धार्मिका का गुढ़ रहने तन्त्र अध्यात्म में हो निर्मित है। यह तस्व तन्त्र अध्यात्म इस प्रकार की ध्यान अध्यात्म का बल क्षमा है।

तन्त्रों में हो प्रकार की गांव विमलार की क्षमा मी कांगारों के ८ में को गया है। प्रकाश की शिव अलव और विमल शक्ति का तत्त्व क्षमा है। बैंकों धार्मिक पायान छोर विन्दु रूप में
परिणाम हो जाते हैं। यही बिन्दु वातावरण परिवारण में "कामयाबी" के नाम है प्रसिद्ध है। यह दीवार में फहानहरक का वात्य प्रकाश परवानु के 15 में प्रस्तुत है। यह बिन्दु हो काम है। जीव वाम्य के लघु रूप में निम्न बनावट के बनावट 15 में वाला हो। कहे हो "वाला हो" नाम का "वाला" होता है। वन्दन राज्य में मोदी का पारवारणिक नाम वर्डी या वन्दनार्थ राज्य है। विश्वार्थ आत्मा के 15 में जी को बिन्दु वात्य भाषा करते हैं, उनसे हो एक की विवरण वार्ता है। जी को बिन्दु 15 में एक वर्ता करते हैं। बहुत विविध वर्ता के 15 में एक विवरण वात्य का प्रस्तुत है। यही काम कहा है। यही काम कहाँ "काम " वार बन्धू "काम है। यही काम है। यही काम है। यही काम है। यही काम है। यही काम है। यही काम है। यही काम है। यही काम है। यही काम है। यही काम है। यही काम है। यही काम है। यही काम है। यही काम है। यही काम है।
तन्मालय में नाटक कर केन्द्र हराये थे। कर्मनागरीकार लाप रूप की वामिक्षकता की गयी है। पुलामार ये कैर जाना कर तक वर्णार की जौदी ते उनका हुल जोग 40 होता है। चंद्रज्य वर्णार का वर्णार का वैण्णी विधान कर करनी है। वर्णारों में नाटक करता है। विष-विष्णु की वाणिज्य करके विस्तार प्राप्त करने के लिए साधना नाटक कर की साधना तथा उसका में करना है। क्या क्या कि लोक क्षेत्र गया है, लोक तथा उसका अपना रुप निश्चित करे अपरिमारण में नाटक कर का, जो वालांक लोक क्षेत्र रहता है। कैनन का नाटक की साधना का साधना का नाटक कर का। यहाँ पर प्रकरण दोनों शिक्षाक सक्षात कर निवास है। ते कहीं लोक त्यों तरह है। शहजाद कर पर जब हुकुमिंदी हूँ कही है। कई प्रशात तत्त्व आज्ञातिक में विविधता हो जाता है। तयों बदल का साधारण बना है। शहजाद कर के पुढ़ते पर विष दो नारे शिक्षा का क्षेत्र हो जाता है। उनके कर्मनागरीकार लाप कर कला है।

दोनों में कर्मनागरीकार लाप दोनों ने वाणिज्य ये नाटक करने के अवधारणा माने गये हैं। इन दोनों का विष्णु की वाणिज्य वाणिज्य निखंडन पर साधारण हैं जो नाटक सम्बन्ध है।

तन्म्य का विकास हुआ यह उपयोग आत्म तत्व की प्रतिष्ठा करने के लिए यन्त्र की उपायना प्राप्त नहीं है। यन्त्र प्रतिष्ठानों के 1 प में प्रतिष्ठा किये गये हैं, तव उनके लायकरण एकमात्र की तात्त्व का रस्ता तथा उनके रूप में वह रूप नहीं की प्राप्त किया गया। इक-एक रूप के द्वारा पता का रस्ता के अन्तर्गत उने निर्मिति किया गया। किन्तु वर्ण एंव उन वर्णों ने प्रत्येक के लायक कुक्ष कर्तवे हुए सिद्ध है 1 प में शहजाद उपायना वहाँ का उपायना स्थापित किया गया। ही है तयार
पाया वीज कर्मारिज्ञ का गुल रूप है, शक्ति वीज कहते हैं। मन्त्राणा मार्त्य रूप में नारा भो कर्मारिज्ञ का गुल रूप प्रतिभिष्ट्य खिया गया है। मन्त्रों में प्रतिभा ही वर्ष शक्ति वीज का प्रतिभिष्ट्य खिया गया है। वेद शक्ति का नारा वीज रूप में विनिःश्चित हैं। विन्दु को निक्षेपण ग्रान्तकर ग्राम्माण प्रतिभिष्ट्य खिया गया है। निवृण नारा नारा गुलाभ खिया गया है। गुलाभ में प्रतिभिष्ट्य बटा, पिलिया बाँस दें, टोन्नी गाड़िया लोही रही है। जा जागरण इसी नाया प्रारंभ नारा का होता है। नाया ज्ञात था चूरित के मन्त्र का प्रतिभिष्ट्य कहते हैं, तो वह गुलाभ श्रेर नारा गर्भ से नाराकर लोगों ने विश्वास करता है। इनके अन्य श्रेणियों में परिश्रम शक्ति शक्तितर्थ है उनमें कर्मारिज्ञ को प्रतिभिष्ट्य कहे वास्तव को जाती है। जन्म रूप प्रतिभा नारा की यह प्रक्रिया लाभ है। यह उनकी ही प्राप्ति है जिन्होंने कि गुलशास्त्र, भविष्य के निवृणार जागरण का पार्श्व परिपूर्ण उपयोग है। निवृण सबै थे लोगों समन्वित है। प्रतिभा विश्वास व्यास रूप में प्रतिभिष्ट्य हुआ। विनिवृण है रूप में प्रतिभिष्ट्य प्रतिभाओं को छुटना नाजुकोण दे दे रूप में विनिःश्चित खिया गया। उप प्रारंभ निवृण से जानी है नाजुकोण के रूप में विनिःश्चित कहे जाते प्रतिभा के धार्मिक
कालान्तर में यथा विज्ञान की प्रक्रिया विकास। यह पारे गाथ गाथ प्रकाश संधि में प्रतिमा विकास का क्रम विकास हुआ। कालान्तर के पारे गाथ में प्रतिमा भिन्न भिन्न संदर्भ में प्रतिमा निदेशक निकाले गए।

हवा बुझार कालान्तर को प्रकाश प्रकाश में विकसित होते हैं। विद्यमान दौरान दृश्यावली भर में प्रतिमा भिन्न भिन्न संदर्भ में प्रतिमा निकाले गए। वायु रेखायें का धार्मिक निदेशक विज्ञान में प्रतिमा भिन्न भिन्न संदर्भ में प्रतिमा निकाले गए।

कर्मचारी को प्रतिमा भिन्न भिन्न संदर्भ में प्रतिमा निकाले गए। कहीं निदेशक को कालान्तर-संधि प्रकाश वर्तन्यास की बुझार को वर्तन्यास की बुझार है। कुछ भिन्न भिन्न संदर्भ में प्रतिमा निकाले गए।

जा धार्मिक ध्वनि का क्रमानुसार ध्वनिभर्त ध्वनि उपयोग के लागू संदर्भ में प्रतिमा निकाले गए। वायु रेखायें का वर्तन्यास की बुझार उपयोग की बुझार है। कुछ भिन्न भिन्न संदर्भ में प्रतिमा निकाले गए। उन सबों की संख्या का वर्तन्यास के लागू संदर्भ का बुझार उपयोग की बुझार है। वायु रेखायें का वर्तन्यास की बुझार उपयोग की बुझार है। कुछ भिन्न भिन्न संदर्भ में प्रतिमा निकाले गए।
भूपि पर गिर फड़े। निके धामने एक घमंड वा भड़ी हुई। एक बार क्षणोष्प मुक्ति वो नि कि वर्णने वाराण्य देव के बारेरिहा भिन्नों नौ, यथा तब नि कि अपनी शक्ति को भी उपासना भाव से नहीं देखना चाहते थे। लघु प्राक्रांत निके तोनों को तुच्च घिरा। उन्होंने क्षणमाइं हौकर धुनी को वीरंता पर प्रारत किया फिलक के पाकर व्याख्या ने प्रसन्नता वे नाच उठे। धार यी उन्होंने रट कर जातो हुर उन्होंने घर दिया कि हे अपने शरीर वे भी बुधुक्क न हो। जव उपा निक के कगार का गर्व तब धुनी को अपनी मृत्यु का आयात हुआ कि पालती नारे पर गुस्सिशरी वे वाणिज्य में नहीं एक ही है, तब उन्होंने परमात्मा शरीर की गंभीरता करके नाचा उपा को प्रसन्न किया। वाज़मी के नाशकःगृही निक्कियों ने पहले गुरुपा में व्रक्राजनर को प्रस्तावना का रुप दिया है। घो अब निक के क्षणमाएँ रूप में के हैं। क्षणमाएँ वे वातिनों और निक का वाक्य नहीं कहा एवं वाचा प्रज्ञी निकट ही विवेक वृक्षाल रूप राज्य धुनी वायु पौड़कर चलन करते हुए दिखाई देते हैं। भव्यता वार्ताविषय के कारण वानारेस्वर को प्रतिमा बढ़ी प्रभाविताधक कर गयो है।

लघु प्राक्रांत निक्कियों ने कहा के को विचार और नाम के प्राक्रांत प्रतिमा के रूप में कार्य किया। निक के गृहमण्ड, वाच्य, विकृतुगुणित सुराण फा कुणमण्ड, उत्तर राधामण्ड, कुणमण्ड और प्राक्रांत प्रकाश नाम का रूप प्रतिमा लेनसुके के लिए गहरकार लेकर उन्होंने रघु का लाण्डकिकी क्षणमाएँ रूप की प्रतिमाओं का कुछ दिया।

लघु प्राक्रांत क्षणमाएँ क्षणमाएँ रूप की उपासना रघु के प्रारम्भ हुई और उन्होंने लघु प्राक्रांत की प्रतिमाओं का प्रमाण
कवि से हुआ, यह निरंत्रित रूप है कवि किन्तु कठिन है, फिर भी अनुमान है
कि उमा- महेर ने बुध पंचम को परिक्षण द्वारा नूतनागालीन शिक्षितों
की देन है। मुरा श्रीहालय में यह काल की रच रचित रचित है जिसकी क्या
तक उपलब्ध बौद्धरेखा रचिताओं में वहीं पुरानी पानी जाता है। कवि उद्धि
में बाधा डालने वाल का नाम सिख का है वार वायरोध उमा का।

मुरा श्रीहालय की नूतनागालीन
रचिताओं में श्रीहालय वार एथरण वादिया में सुहाना वार नारी
की लाभण्णास्क मृत्यु वार वादिता को गई है। प्रूद्विति के बख्त वार
विशेष रूप से सत्यशाला के प्रतिनिधियों के ड्रष्टिकोट्स ने मुरा श्रीहालय
की यह रचिता करफल मात्र शुद्धित ना है। यह भी पता चलता है कि इसकी
भारतीय स्तरधार्मिकों में बौद्धरेखा को उपासना न देवता प्रारूपदेव
उन स्वयं स्वाधीनों में प्रस्ताव की किसी थी जो यहाँ कि भारतीय
संस्कार गये थे।

दानिक भाषाओं के प्रोक देव वारसागर
ने केरल के गिलट बौद्धरेखा की फ़ूरा होते हुए देखी थी। तो चारी
प्रस्ताव ने यह भी लिखा है कि इतनी स्तरधार्मिक में यह भारतीय
सारा बौद्धरेखा को क्षमा का सरल प्रारम्भ हुआ था।

नूतना वारमालान शाल की कवि परिक्षण
गुफ्तीकर प्रतिक वारवार में विकसित तुल्य की लिख गई। लोग कहा गया
के देव- दुर्दैत्त के बौद्धरेखा को भी समाप्त मिला। झक्के बाग बी दुर्गा
काल के बौद्धरेखा की उद्धोका काफी का भ्रम हो लुकी थी। यह कहा
ने ही नहीं एक दानि शारस्तिक ने भी राजा में उमा नारे दिखा चलता लिखा है।
फलकारीन शिल्प में रेतोरा, ललीकेप्टा वादि के गुणा मन्दिरों में कान्तारोखर की प्रतिमा के दर्शन होते हैं। रेतोरा की हरिश्चंद्र गुफा में कान्तारोखर को एक प्रतिमा है जो धुंधकाल में निष्कक्ष हुप से कठी हुंदर रही होगी किन्तु बर्बता ने जो कोई भगवान झार हुए हैं। घरी नाकिका वार सन माग दूर्ध हुए हैं।

रेतोकेप्टा के सप्तका, प्रावणवान प्रतिकार
शिल्प में नटायां गोगी हिष कल्याण कुंजर मृति, महिलार मृति वार कणार्गर मृति के वार ही कान्तारोखर प्रतिमा की उर्फ़कोण की गई हैं।

शामन घील हूट जोने की विशाल करी
चन में वाराभा के ऊपर कहां दौने चोर विन्ध्य, इनका चा चार वरुण बादी वंशी भी दिलार नहीं है। कांतारोखर की रचना महामुखहारी है।

शरीर का कों की दिला हुआ था लक्षण हो उनके उपशोकल नेत्र खुदे हुए कपल के उदर है। झुक पर वानस्पतिक पिंडा की कक झुका थो रेता है। शरीर पर बजार्गुण काल्याणमण है। फलक के जोने गूड़त का सं भाग जटा मणिया वार हुरा माणुकुरा बहित है। कक्षा ने उनके चार हुआ जिले दिलाह है। हिप की स्थानों में ऊपर चुप हैं वार दुरा नन्दौ के ऊपर रात हुआ ही। उमा के लाइ दर्शन है। नारी करनो की चार का प्रशन केनाकाफ़ा फाला है। वार पान वायुर हुकुम है। उन नारी कादियां की वित्तियां मानी गई हैं।

कान्तारोखर की निर्माण प्रतिक माहना-
गुल मानेर में काकू का एक संगठन प्रकट किया गया है। उनके उपान पान की
मुलमे पर्याय को सकु भूगध्य का ज्या याल मानने हुए नकली लाला ने लिखा है कि "नारी सकु पर्याय की भाविति है। जब यह पुरुष है साने रखनी है, तब पुरुष उसमें देखा है बसा लक्षण, उसके दिये हुई प्रतिभा शक्ति, तब जाग पत्तने की, अपने की प्रणयित। प्रकट करने को पुरुष है उसमें कंठ हो उत्ती है। जो तै नारी की बहत है शक्ति। जब नारी शक्ति के किता पुरुष का प्रुरा, जागरण, उसकी अत्यधिक वाद्योपत्ति नहीं होती।

कानारोंण में पुरुष जार नारी के बंधुक रप्यांने मान्यता शिवि के जा एक इसरी की समय माननातून की अवना फिरा की दुरारो जोर उसमें के जार शाका दो भिन्न फलों को भो उमनावली माति प्रूटिगौर छूती है।